महात्मा गांधीकी आर्थिक विचारधारा

केशवाला भरतभाई पी.
श्री एस. एम. जाडेजा कोलेज,
कुतियाणा

१. आमुख

हिमालय–सी उन्नत और गंगा–सी पावन गांधी विचारधारा को भारत के पुनरुत्थान और सांस्कृतिक चेतना की उद्गीथ कहा जा सकता है । लगभग तीस वर्ष तक महात्मा गांधी और उनकी विचारधारा से भारतीय राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थितियाँ आप्लावित रही है । भारतवर्ष में कई विचारधाराओं का उदय और अस्त हुआ है । ऐसी ही एक विचारधारा सूर्य के समान भारतवर्ष में जन्मी और विकसित होकर पूर्ण रुप से प्रकाशित भी हुई । वह विचारधारा है – ''गांधी विचारधारा'' ।

भारतीय इतिहास में 'गांधीयुग' एक ऐसा काल रहा है जिस पर कई प्रकार के प्रभाव द्रष्टिगोचर होते है । एक और परंपरागत विचारों का प्रभाव है तो दूसरी और अंग्रेजी सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव के साथ–साथ युगीन गांधी विचारधारा का प्रभाव भी है ।

२. ''गांधीवाद'' अथवा ''गांधी विचारधारा'' से तात्पर्य

२५ मार्च, १९३१ में होनेवाले कांग्रेस के कराँची अधिवेशन के समय गांधीजी अपने कार्यक्रम का विरोध करते हुए लोगों से कहा है – ''गांधी मर सकता है, पर गांधीवाद अमर रहेगा ।''[१]

वस्तुत: गांधी विचार पद्धति का व्यापक नाम ही ''गांधीवाद'' है । गांधी विचारधारा के तात्पर्य उन सभी सिद्धांतो से है जिनका गांधीजी ने समर्थन तथा प्रयोग किया है ।

३. आर्थिक विचारधारा

दरिद्र नारायण बापू भारत में आर्थिक अभ्युदय चाहते थे । देश की आर्थिक विषमता उन्हें असहय थी । एक और धन का एकत्र हो जाना और दूसरी और लाख़ों का भूखा मरना वे कभी नहीं देख़ सकते थे । उनके अनुसार ''वर्ण के नियम ने विशेष प्रकार की योग्यतावाले मनुष्यों के लिए कार्यक्षेत्र स्थापित कर दिया । इससे अनुचित प्रतियोगिता दूर हो गई । वर्ण नियमों ने मनुष्यों की मर्यादा को तो माना किंतु ऊँच–नीच के भेद को स्थान न किया । ..... मेरा विश्वास है कि आदर्श समाज का विकास तभी होगा जब इस नियम का अर्थ पूरी तरह समझा जायेगा और उसके अनुसार कार्य होगा ।''[२] महात्माजी के आर्थिक अभ्युदय के अंतर्गत आनेवाले विचार इस प्रकार है ।

३.१ सर्वोदय

सर्वोदय शब्द अत्यंत पवित्र है । सबकी उन्नति सबका हित और सबका उत्थान यही इस शब्द का व्यापक अर्थ है । वस्तुत: सर्वोदय ज्ञानमय कर्मयोग का ही दूसरा नाम है जो शाश्वत सत्य के बल से ही व्यक्त स्वरुप धारण करता है ।

गाँधीजी के अनुसार सर्वोदय का स्वरुप इस प्रकार है – ''मेरी राय में हिन्दुस्तान की ओर सारे संसार की अर्थव्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि उसमें बिना खाने और कपडे के कोई भी रहने न पाये । दूसरे शब्दों में हर एक को अपनी गुजर बसर के लिए काफी काम मिलना ही चाहिए । यह आदर्श तभी सिद्ध होगा जब कि प्राथमिक आवश्यक्ताएँ पूरी करने के साधनों पर जनता का अधिकार रहेगा । जिस प्रकार भगवान की पैदा की हुई हवा और पानी सबको मुक्त मयस्सर होता है, या होना चाहिए, उसी तरह ये साधन भी सबको बिना रोक–टोक के मिलने चाहिए, उन्हें दूसरों को लूटने के लिए लेनदेन की चीजें हरगिज नहीं बनने देना चाहिए ।''[३]

३.२ मशीनों का विरोध

साबरमती के संत अपने मजदूरों के प्रति सहानुभूति रखते हैं । गांधी विचारधारा में मशीन का विरोध इसलिए है कि उसके उपयोग से संपति पूंजीवादियों के हाथ में एकत्र हो जाती है और बेकारी बढ़ती है । जिसके कारण मानव कितनी पतितावस्था में पहुँच गया है, खानें को नहीं मिलता इसलिए कुते के मुंह से रोटी छीनने को तत्पर है । मानव का कितना अध:पतन हो रहा है ? पूंजीवादी अपने स्वार्थ हेतु इस विषमता को प्रोत्साहन देते है । समाज म अधिक श्रम मजदूर, किसान और निम्न वर्ग के लोग रहते है । मिल में कारखाने में परिश्रम के भागी वे ही है, परंतु संपति का सबसे बडा भाग पूंजीपतियों की ही जेब में जाता है । हिंद स्वराज्य में उन्होंने लिख़ा है ''मशीन का एक भी गुण नहीं है पर अवगुणों पर तो मैं एक पुरो पुस्तक लिख सकता हूँ, मेरा उदेश्य मशीन को खत्म करना नहीं है, बल्कि उस पर नियंत्रण रखना है ।''

३.३ ग्रामीण उद्योग–धंधो का प्रचार

देश में बडे–बडे कारखाने स्थापित करना ग्रामीणों के प्रति अन्याय है । यदि आवश्यक्ता को रुप में कारखाने खोलने पडे तो उन पर राज्य का नियंत्रण अनिवार्य है । व्यर्थ की अधिक उत्पति बेकारी बढाती है । बहुत सा उत्पादन कर लेने पर उस माल की खपत नहीं हो पाती और मिलें बंद हो जाती है । परिणाम स्वरुप लाखों मजदूर बेकार हो जाते है । इस बेकारी को दूर करने को एक मात्र साधन ग्रामीण उद्योगों का प्रचार है । इस संबंध में गांधीजी ने कहा है – ''जब अर्थशास्त्र में और जीवन में गाँवों की द्रष्टि प्रवेश करेगी तब जनता का मन गाँव में बनी वस्तुओं का अधिक से अधिक उपयोग करने की और मुड़ेगा, तभी जनता अपने जीवन के लिए आवश्यक वस्तुएँ गाँवो में तैयार कराने के सुझाववाली बनेगी । इसके परिणाम स्वरुप गाँवों की कला और वहाँ के औजारों को सुधारने की, देहाती जनता को संस्कारी बनाने की, गाँवो के जंगलों और खेतों में पैदा होनेवाली उपज के बारे में और उपयोग करने के ज्ञान के अभाव में गाँवो में जिस संपति का और प्राकृतिक साधनों का आज कोई उपयोग नहीं हो रहा है, उनके संबंध में खोज और आविष्कार करने की प्रवृत्ति जनता में जागेगी ।''[४]

४. खादी और चरखा

आर्थिक अभ्युदय के लिए गांधीजी ने मात्र पूंजी के समान वितरण की बात कहकर अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं मानी । उन्होंने आर्थिक स्वावलंबन तथा विकास के लिए जड़ की बात सोची और चरखा तथा खादी की योजना कार्यान्वित की । इसके लिए उन्होंने चरखा संघ, ग्रामोद्योग प्रचार संघ, आदि की स्थापना की । नेहरुजी के शब्दों में–खादी हिन्दुस्तान की आजादी का पोशाक है । गांधीजी के अनुसार ''स्वराज्य के समान ही खादी भी राष्ट्रीय जीवन के लिए

श्वास के जितनी ही आवश्यक है । जिस तरह स्वराज्य को हम नहीं छोड सकते । खादी को छोड़ने का मतलब, भारतीय जनता को बेच देना, भारतवर्ष की आत्मा को बेच देना ।'' गांधी विचारधारा में चरखें की महिमा सर्वापरी है । यह लंगडे की लाठी, भूखे का दाना और निर्धन स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा करनेवाला किल्ला है । चरखा स्वावलंबन और आत्म विश्वास का गीत सुनाता है ।

५. गौ–रक्षा

सत्याग्रह के प्रणेता पूज्य बापू ने गौ–रक्षा के लिए भी प्रयत्न किए । हिन्दु धर्म की विशेषता है गौ–रक्षा । आधुनिक युग में गौ–रक्षा का आर्थिक महत्व है । इस संबंध में इस प्रकार लिखा है, ''इसके लिए वे ऐसी संस्थाओं का निर्माण करने के पक्ष में थे जिनके द्वारा गौ–रक्षा का समुचित प्रबंध किया जा सके ।''

६. निष्कर्ष

महात्मा गांधी आधुनिक युग के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न राजनीतिज्ञ एवं अर्थवेता के रुप में विश्व के सम्मुख उभरे है । परिणाम एवं गुणात्मक दोनों दृष्टियों से भारतवर्ष की आर्थिक स्थितियों के सुधार में महत्वपूर्ण योगदान है । महात्माजी 'स्व' की अपेक्षा 'पर' को अधिक महत्व प्रदान किया है । गुजरात को स्वर्णिम गुजरात बनाने की नींव महात्मा गांधी ने रखी ऐसा कहे तो अन्यथा नहीं होगा ।

संदर्भ

१ बोझ, एन. के. (१९९४). स्टडीज इन गांधीजी
२ पट्टा, भिसीतारभैया (१९८७). गांधी और गांधीवाद (प्रथम भाग)